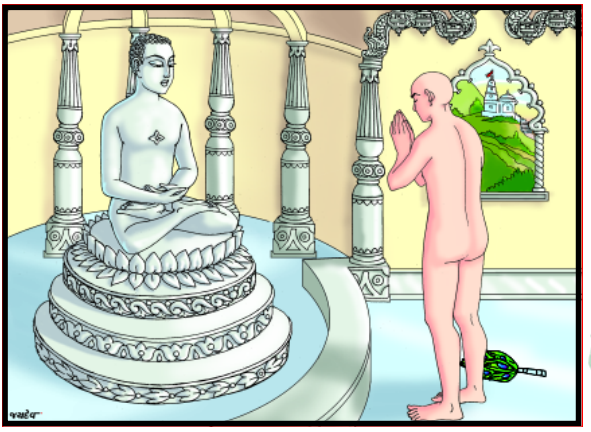

(E - 109)
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहि चैन पडती है;
छबी वैराग तेरी सामने, आंखो के फिरती है। (टेक)

निराभूषण विगत दूषण; परम आसन मधुर भाषण;
नजर नैनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है। १

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में;
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है। २

मिले गर स्वर्ग की सम्पति; अचम्भा कौनसा इसमें;
तुम्हें जो नयन भर देखे; गती दुरगति की टरती है। ३

हजारों मूर्तियां हमने बहुतसी, अन्यमत देखी;
शांति मूरत तुम्हारीसी, नहीं नजरों में चढती है। ४
जगत सिरताज हो जिनराज, 'सेवक' को दरश दीजे;
तुम्हारा क्या बिगडता है, मेरी बिगडी सुधरती है। ५